नवभारत बिलासपुर

स्वास्थ्य जगत

१० शुक्रवार २५ फरवरी २०००

कैंसर के उपचार में चमत्कारिक सफलता

भारतीय जड़ी-बूटियाँ कैंसर जैसे [illegible] रोग से निपटने में सक्षम हैं. राजस्थान के आयुर्वेदिक चिकित्सक नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है. उन्होंने असम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार १८ बरसों तक वनस्पतियों पर अनुसंधान कर 'कर्कटोल' नामक यौगिक बनाया है. आठ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के इस मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिंदगी देने में सफल हुए हैं. पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केंद्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है. वैसे विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है.

डॉ. तिवारी का तैयार किया यौगिक सिर्फ एसाइटिस कैंसर में बेअसर सिद्ध हुआ है. यहाँ मालवीय नगर में अपने घर में ही कैंसर पीड़ितों को जीवन दान दे रहे ६० साल के डॉ. तिवारी बीते २० साल में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं. रोग मुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटे इसकी पुष्टि करती हैं.

अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डॉ. तिवारी को मरीज 'रेफर' किए हैं. कैंसर के इलाज में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने एक फिल्म बनाई है. ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घंटे का इंटरव्यू प्रसारित किया है. वे उपचार के लिए इंग्लैंड, जर्मनी, बेल्जियम, देशों का दौरा कर चुके हैं. मुंबई के टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डॉक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य कैंसर रोगी भेजे हैं. देश-विदेश के कई मरीज 'कर्कटोल' से ठीक हुए हैं. टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसरग्रस्त डॉक्टर को भी इलाज के लिए यहाँ भेजा गया है.

डॉ. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते. उन्होंने बताया कि उनके पास ९० फीसदी मरीज ऐसे आते हैं जिन्हें हर तरह के लंबे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है. फिर भी उनमें से १० से ३० फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और ३० से ४५ फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है. अंतिम अवस्था के कैंसर में उन्नत एलौपैथिक चिकित्सा से ५ से १० फीसदी मरीजों को ही लाभ हो पाता है. ऐसे में डॉ. तिवारी की सफलता (पांच से दस) का आंकड़ा बहुत मायने रखता है. कैंसर की दूसरी अवस्था (सैकंड स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर ४५ से ५० फीसदी बताते हुए वे दावा करते है कि उनकी दवा प्रारंभिक अवस्था वाले (८० फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की क्षमता रखती हैं. देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किए गए परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गई है.

इन परीक्षणों की रपटों के साथ डॉ. तिवारी के पास कई मरीजों की जांच रपटें भी मौजूद हैं. इनमें ऐसी रपटे शामिल हैं जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीजों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डॉ. तिवारी के इलाज के बाद जांच कर रहे उन्हीं मरीजों में कैंसर का प्रभाव शून्य बताया है. १९७९ से कैंसर कर इलाज क रहे डॉ. तिवारी ठीक हो चुके कई मरीजों का रेकार्ड जला चुके हैं. क्योंकि उनके पास उसे रखने की जगह नहीं है. १९८५ से '९० तक के रिकार्ड के आधार पर जुटाए उनके आंकड़े बताते हैं, कि इस अरसे में उन्होंने ९७७ रोगियों का इलाज किया. उनमें भोजन नली के कैंसर के ४२९, स्तन कैंसर के २०८, गर्भाशय के कैंसर के १७८ ब्लड कैंसर के १६२ रोगी थे. भोजन नली के कैंसर रोगियों में से २८ फीसदी को सौ फीसदी फायदा हुआ, २७ फीसदी को काफी लाभ मिला जबकि ४५ फीसदी को फायदा नहीं हुआ. डॉ. नंदलाल तिवारी का पता है.

डॉ. नंदलाल तिवारी
२/१३, मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान), पिन- ३०२००५, फोन: -(०१४१)- ५२१३८५.